10 कुंभा का आत्मबलिदान

आज़ादी किसे प्रिय नहीं होती? मनुष्यों की तो बात ही क्या, पशु-पक्षी भी पराधीन रहना पसंद नहीं करते। लेकिन कभी-कभी इस प्रिय आज़ादी की रक्षा के लिए प्राण भी न्यौछावर करने पड़ते हैं।

राजपूतों की छोटी-सी रियासत बूँदी। वहाँ के वासी थे आज़ादी के परवाने, हाड़ा जाति के राजपूत। परम वीर, नितांत स्वाभिमानी। अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए हरदम मर-मिटने को तैयार।

लेकिन शीघ्र ही उनकी वीरता की परीक्षा की घड़ी आ पहुँची। चित्तौड़ के महाराणा ने बूँदी को अपनी प्रचंड सैन्य शक्ति के बल पर अपने अधीन करना चाहा। बूँदी के हाड़ा राजपूतों ने डटकर युद्ध किया। राणा को इस युद्ध में मुँह की खानी पड़ी।

बूँदी की छोटी-सी रियासत के उन जाँबाज़ शूरों ने चित्तौड़ के महाराणा राणा को धूल चटा दी। इस अपमानजनक पराजय से राणा तिलमिला उठे। वे क्रोध से आग-बबूला होकर प्रतिज्ञा कर बैठे, "जब तक बूँदी पर अपना झंडा नहीं फहरा दूँगा, तब तक एक बूँद पानी भी नहीं पीऊँगा।"

बूँदी छोटा-सा राज्य सही, पर उसे चुटकियाँ बजाते तो जीता नहीं जा सकता था। जल्दबाजी में बिना पूरी तैयारी किए युद्ध करने पर चित्तौड़ को फिर पराजय का मुँह देखना पड़ता। पूरी तैयारी और युद्ध में काफी समय लगने की संभावना थी।

ऐसी स्थिति में राणा की प्रतिज्ञा का क्या हो? राणा अपनी प्रतिज्ञा से तिल भर भी डिगने को तैयार न थे। सोच-विचार के बाद एक मंत्री को यह उपाय सूझा कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए और राणा उसे जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें। फिर अन्न-जल ग्रहण कर लें। बाद में भली-भाँति तैयारी करके बूँदी का असली किला जीता जाए।

यह उपाय सबको पसंद आया। फिर तो तुरंत एक मैदान में बूँदी का नकली किला बनाया जाने लगा। तभी चित्तौड़ की सेना का एक हाड़ा सैनिक जंगल से शिकार खेलकर लौटा। किला बनते

देखकर वह ठिठक गया। ध्यान से देखकर बोला, "अहा! कितनी सुन्दर कारीगरी है! ठीक वैसा ही द्वार, वैसा ही परकोटा, वैसे ही बुर्ज! बूँदी के किले की हूबहू नकल की गई है। मेरी मातृभूमि बूँदी, तुझे प्रणाम है।" यह कहकर उसने उस किले के सामने अत्यंत सम्मान से सिर झुका दिया।

लेकिन सैनिक का कौतूहल शांत नहीं हुआ। उसके मन में एक प्रश्न घूमता रहा, 'आखिर बूँदी का यह नकली किला यहाँ क्यों बनाया जा रहा है?'

वह अपना कौतूहल मिटाने के लिए कारीगरों के पास पहुँचा। उन्होंने उसे सब बातें कह सुनाईं। बातें सुनते ही उस सैनिक की पेशानी पर बल पड़ गए। वह विद्युतगति से वहाँ से निकल आया। दृढ़ निश्चय से उसकी मुट्ठियाँ कस गईं। आँखें लाल हो गईं । बाँहे फड़कने लगीं। उसका ओजस्वी स्वर फूट पड़ा, " यह नहीं हो सकता। मेरी प्यारी मातृभूमि बूँदी, जब तक तेरा यह बेटा जीवित है, तब तक तेरा यह अपमान कदापि नहीं हो सकता। मैं रक्त की आखिरी बूँद शेष रहने तक अपनी मातृभूमि की रक्षा करूँगा।"

जानते हैं, कौन था यह सैनिक? यह था वीर हाड़ा राजपूत कुंभा। इसकी मातृभूमि [थी बूँदी। वह] यह बहुत समय से चित्तौड़ के राणा की सेना में नौकरी करता था। बूँदी के कुछ और हाड़ा राजपूत भी राणा की सेना में सैनिक थे। सभी परम स्वामिभक्त, परम वीर!

ये सभी राणा के लिए हरदम मरने-मिटने को तैयार थे, पर अपनी मातृभूमि बूँदी को अपमानित करने का यह नाटक इनके लिए अत्यंत [असह्य था। सब निश्चिंत थे।] इन हाड़ा राजपूतों की इस नाराजगी से बेखबर थे।

योजनानुसार राणा दूसरे दिन बूँदी के नकली किले को जीतने के लिए सेना लेकर चल पड़े। एकदम निश्चित जीत के बारे में पूरी तरह आश्वस्त, क्योंकि वास्तविक युद्ध नहीं, युद्ध का नाटक ही तो होना था। राणा के वहाँ पहुँचने पर हल्का-फुल्का प्रतिरोध करने के बाद बूँदी के नकली सैनिकों को हथियार डाल देने थे।

लेकिन यह क्या! नकली किले में घुसने से पहले ही राणा को तीरों की जोरदार बौछार का सामना करना पड़ा। तीर ठीक लक्ष्य साधकर छोड़े जा रहे थे। राणा ने बड़ी मुश्किल से अपने को बचाया। यह सब कुछ अप्रत्याशित था। कोई नहीं जान पाया कि यह कैसे हुआ?

अब राणा का सेनापति यह जानने के लिए आगे बढ़ा कि माज़रा क्या है? तभी अंदर से हाड़ा राजपूत वीर कुंभा का सिंह गर्जन सुनाई पड़ा, "सेनापति जी, ख़बरदार! पीछे हटिए। हमारे जीते जी आप बूँदी के किले में पैर नहीं रख पाएँगे। अंदर आने के लिए आपको बूँदी के वीरों की लाशों पर से गुजरना होगा।"

"अच्छा! कुंभा यह तुम हो! अरे भाई! यह बूँदी नहीं है। यह तो राणा की प्रतिज्ञा पूरी कराने के लिए बनाया गया नकली किला है। बात समझो और एक तरफ हट जाओ।"

"सेनापति जी! मातृभूमि तो मातृभूमि होती है। वीर अपने प्राण देकर भी उसकी रक्षा करते हैं। मातृभूमि नकली भी होती है, यह मैं आपसे ही सुन रहा हूँ। हमने राणा का नमक खाया है। हम उनके सेवक हैं। उनके लिए प्राण तक दे सकते हैं। पर किसी के भी हाथों इस तरह अपनी मातृभूमि बूँदी का अपमान कदापि सहन नहीं करेंगे।"

सभी लोगों ने लाख समझाया, लेकिन बूँदी के नकली किले में मोर्चाबंदी करके डटे हुए उन मुट्ठी भर हाड़ा राजपूतों में से कोई तिल भर भी डिगने या झुकने को तैयार नहीं हुआ।

और अंत में युद्ध हुआ। एक बेमेल मुकाबला। एक ओर चित्तौड़ के राणा के हज़ारों सैनिक और दूसरी ओर हाड़ा कुंभा के नेतृत्व में लड़ने वाले बीस-पच्चीस देशभक्तों की छोटी-सी टोली, जो बूँदी के उस नकली किले में मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना लिए हुए उसकी रक्षा करती हुई मर मिटी।

जब तक एक भी हाड़ा राजपूत जिंदा रहा, चित्तौड़ का एक भी सिपाही बूँदी के उस नकली किले में प्रवेश नहीं कर पाया।

कहानी का अंत हो गया। राणा जीता, कुंभा और उसकी वीर टोली हार गई।

पर क्या सचमुच ऐसा ही हुआ? नहीं! लगता ऐसा है, जैसे राणा जीतकर भी हार गया और कुंभा अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए मरकर भी जीत गया।

सचमुच कोई-कोई जीत, हार से भी बदतर होती है और कोई हार जीत से भी अधिक शानदार। क्या कुंभा की हार तथा उसका आत्मबलिदान किसी शानदार जीत से भी अधिक गौरवपूर्ण नहीं है?

शब्दार्थ

पराधीन-गुलाम
प्राण-जान
जाँबाज़-जान की बाजी लगाने वाला
पराजय-हार
आग-बबूला होना-बहुत क्रोधित होना
संभावना-आशा, उम्मीद
ठिठकना-थोड़ी देर के लिए रुकना
पेशानी-माथा, मस्तक
असह्य-न सहने योग्य।
प्रतिरोध-विरोध, मुकाबला
बदतर-अत्यधिक खराब
आज़ादी के परवाने-आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले
अधीन= वश में, क़ब्ज़े में
धूल चटा दी-हरा दिया
तिलमिला उठा-बेचैन हो गया
चुटकियाँ बजाते-बहुत आसानी से
तिलभर न डिगना-थोड़ा भी न हटना
परकोटा=गढ़ की रक्षा के लिए निर्मित ऊँची चहारदीवारी
विद्युतगति-बिजली जैसी (तेज़) चाल से
वास्तविक-असली
अप्रत्याशित-जिसकी आशा न हो
गौरवपूर्ण-सम्मान से युक्त, महत्त्वपूर्ण

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. दिए गए शब्दों को रिक्त स्थानों में भरिए-

बूँदी, चित्तौड़, नकली, सैनिक, मंत्री

(क) राणा .... का रहने वाला था।

(ख) बूँदी का .... किला बनाया जाने लगा।

(ग) कुछ हाड़ा राजपूत राणा की सेना में .... थे।

(घ) .... ने सुझाव दिया कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए।

(ङ) वीर कुंभा .... का सपूत था।

2. हाड़ा राजपूतों की राणा से नाराजगी का क्या कारण था?
3. अपनी हार से क्रोधित हुए राणा ने अचानक क्या प्रतिज्ञा कर डाली?
4. राणा की प्रतिज्ञा तुरंत पूरी किए जाने में क्या कठिनाई थी?
5. बूँदी का नकली किला क्यों बनाया गया?
6. प्रस्तुत पाठ से कुंभा के किन-किन गुणों का पता चलता है?

पाठ से आगे

1. कुंभा की हार, राणा की जीत से [illegible]
2. आप अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए क्या-क्या कर सकते हैं?
3. हाड़ा कुंभा की किन बातों ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया ओर क्यों?
4. अगर आपकी जमीन पर कोई बल पूर्वक एवं छलपूर्वक कब्जा करना चाहे तो इस समस्या का समाधान आप कैसे करेंगे?

व्याकरण

1. पाठ में प्रयुक्त जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को छाँटकर लिखिए।
2. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए**

धूल चटाना, आग बबूला होना, आँखें लाल होना, लाशों पर से गुजरना, मुँह की खाना ।

गतिविधि

1. बॉक्स में दी गई कहानी को वार्तालाप के रूप में लिखिए।

ज़ेन बातचीत

ज़ेन गुरु अपने शिष्यों को सिखाते हैं कि वे अपने आप को व्यक्त कैसे करें। दो मठ ऐसे थे जिनमें एक-एक बालक भी रहता था। हर सुबह एक मठ का नन्हा शिष्य जब सब्ज़ी खरीदने जाया करता तो उसकी मुलाकात दूसरे मठ के शिष्य से होती, जो अपने किसी काम से जा रहा होता था।

एक दिन दूसरे वाले शिष्य ने पहले से पूछा, " तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जहाँ मेरे पाँव मुझे ले जाएँगे।" पहला बोला। इस उत्तर से पहला शिष्य चकरा गया। वह अपने गुरु से मदद माँगने गया। गुरु ने कहा, "कल सुबह जब तुम उस लड़के से मिलोगे तो उससे फिर यही सवाल पूछना। वह तुम्हें वही जवाब देगा। तब तुम पूछना 'अगर तुम्हारे पाँव न होते, तब तुम कहाँ जाते भला?' अच्छा सबक मिलेगा उसे।"

अगले दिन फिर बच्चों की मुलाकात हो गई। "कहाँ जा रहे हो तुम?" दूसरे शिष्य ने पूछा।

"जहाँ हवा जाएगी वहीं।"

नन्हा शिष्य एक बार फिर चकरा गया, अपनी हार मानकर फिर वह गुरु के पास गया।

गुरु ने सुझाव दिया, " उससे पूछना अगर हवा न चले तो तुम कहाँ जाओगे?"

अगले दिन बच्चे तीसरी बार एक दूसरे से टकराए। दूसरे ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?" "मैं सब्ज़ी खरीदने बाज़ार जा रहा हूँ।" पहले ने जवाब दिया।

साभार: चकमक, बाल विज्ञान पत्रिका, नवंबर, 2009